

समाज विकासमाला

सिंहासन-बत्तीसी

१

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

ಆವಗಾರ್ಲೆ ಸಿಂಹಾಸನ ಬತ್ತೀಸಿ 1527

समाज-विकास-माला : ६७

सिंहासन-बत्तीसी—१

राजा विक्रमादित्य की रोचक कहानियां

लेखक
यशपाल जैन

सम्पादक
यशपाल जैन

१९५७
सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

पहली बार : १९५७
मूल्य
छः आना

मुद्रक
हिंदी प्रिंटिंग प्रेस
दल्ली

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव बड़ी सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रखा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में किसी सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

—मंत्री

पाठकों से

राजा विक्रमादित्य का नाम पाठकों ने सुना होगा। उनके साहस और दान की बहुत-सी कहानियां कही जाती हैं। 'सिंहासन-बत्तीसी' में इन्हीं राजा विक्रमादित्य की कहानियां हैं। महादेव का बनवाया हुआ एक सिंहासन था, जो बाद में राजा विक्रमादित्य को मिला। उसके चारों ओर बत्तीस पुतलियाँ थीं। जब राजा भोज उस पर बैठने लगा तो बारी-बारी से सब पुतलियों ने उसे रोककर विक्रमादित्य की वीरता और दान की कहानियाँ सुनाईं और कहा कि उस जैसा कोई हो तो सिंहासन पर बैठे।

कहानियां पुरानी हैं। उन्हें नई भाषा और शैली में इस पुस्तक में दिया गया है। बत्तीस कहानियाँ एक भाग में नहीं आ सकती थीं, इसलिए दो भाग में दी गई हैं।

कहानियां बड़ी रोचक हैं। पाठक बिना पूरी पुस्तक पढ़े नहीं छोड़ सकेंगे।

—सम्पादक

सिंहासन-बत्तीसी

भाग १

बहुत दिनों की बात है। उज्जैन नगरी में राजा भोज नाम का एक राजा राज करता था। वह बड़ा दानी और धर्मात्मा था। न्याय ऐसा करता कि दूध और पानी अलग-अलग हो जाते। उसके राज में शेर और बकरी एक घाट पानी पीते थे। प्रजा सब तरह से सुखी थी।

नगरी के पास ही एक खेत था, जिसमें एक आदमी ने तरह-तरह की बेलें और साग-भाजियां लगा रक्खी थीं।

एक बार की बात कि खेत में बड़ी अच्छी फसल हुई। खूब तरकारियां उतरीं; लेकिन खेत के बीचों-बीच थोड़ी-सी जमीन खाली रह गई। बीज उसपर डाले थे, पर जमे ही नहीं। सो खेत वाले ने क्या किया कि वहां खेत की रखवाली के लिए एक मचान बना लिया। पर उसपर वह जैसे ही चढ़ा कि लगा चिल्लाने—"कोई है? राजा भोज को पकड़ लाओ और सजा दो।"

यह बात राजा के कानों में पहुंची। राजा ने कहा,

"मुझे उस खेत पर ले चलो। मैं सारी बातें अपनी आंखों से देखना और कानों से सुनना चाहता हूं।"

लोग राजा को ले गये। खेत पर पहुंचते ही देखते क्या हैं कि वह आदमी मचान पर खड़ा है और कह रहा है--"राजा भोज को फौरन पकड़ लाओ और मेरा राज उससे ले लो। जाओ, जल्दी जाओ।"

यह सुनकर राजा को बड़ा डर लगा। वह चुपचाप महल में लौट आया। फिक्र के मारे उसे रातभर नींद न आई। ज्यों-त्यों रात बिताई। सवेरा होते ही उसने अपने राज्य के ज्योतिषियों और पंडितों को इकट्ठा किया। उन्होंने हिसाब लगाकर बताया कि उस मचान के नीचे धन छिपा है। राजा ने उसी समय आज्ञा दी कि उस जगह को खुदवाया जाय।

खोदते-खोदते जब काफ़ी मिट्टी निकल गई तो अचानक लोगों ने देखा कि नीचे एक सिंहासन है। उनके अचरज का ठिकाना न रहा। राजा को खबर मिली तो उसने उसे बाहर निकालने को कहा, लेकिन लाखों मजदूरों के जोर लगाने पर भी वह सिंहासन टस-से-मस न हुआ। तब एक पंडित ने बताया कि यह सिंहासन देवताओं का बनाया हुआ है। अपनी जगह से तबतक नहीं हटेगा जबतक कि इसको कोई बलि न दी जाय।

राजा ने ऐसा ही किया। बलि देते ही सिंहासन ऐसे ऊपर उठ आया, मानो फूलों का हो। राजा बड़ा

खुश हुआ। उसने कहा कि इसे साफ़ करो। सफाई की गई। वह सिंहासन ऐसा चमक उठा कि अपना मुंह देख लो। उसमें भांति-भांति के रत्न जड़े थे, जिनकी चमक से आंखें चौंधियाती थीं। सिंहासन के चारों ओर आठ-आठ पुतलियां बनी थीं। उनके हाथ में कमल का एक-एक फूल था। कहीं-कहीं सिंहासन का रंग बिगड़ गया था। कहीं-कहीं से रत्न निकल गये थे। राजा ने हुक्म दिया कि खजाने से रुपया लेकर उसे ठीक कराओ।

ठीक होने में पांच महीने लगे। अब सिंहासन



सिंहासन के चारों ओर आठ-आठ पुतलियां थीं।

ऐसा हो गया था कि जो भी देखता, देखता ही रह

जाता। पुतलियां ऐसी लगतीं, मानों अभी बोल उठेंगी।

राजा ने पंडितों को बुलाया और कहा कि तुम लोग कोई अच्छा मुहूर्त्त निकालो। उसी दिन मैं इस सिंहासन पर बैठूंगा। एक दिन तय किया गया। दूर-दूर तक लोगों को निमंत्रण भेजे गये। तरह-तरह के बाजे बजने लगे, महलों में खुशियां मनाई जाने लगीं।

सब लोगों के सामने राजा सिंहासन के पास जाकर खड़े हो गये; लेकिन जैसे ही उन्होंने अपना दाहिना पैर बढ़ाकर सिंहासन पर रखना चाहा कि सब-की-सब पुतलियां खिलखिला कर हँस पड़ीं। लोगों को बड़ा अचंभा हुआ कि वे बेजान पुतलियां कैसे हँस पड़ीं। राजा ने डर के मारे अपना पैर खींच लिया और पुतलियों से बोला, "ओ पुतलियो, सच-सच बताओ कि तुम क्यों हँसी!"

पहली पुतली का नाम था रत्नमंजरी। राजा की बात सुनकर वह बोली, "राजन्, आप बड़े तेजस्वी हैं, धनी हैं, बलवान हैं, लेकिन घमंड करना ठीक नहीं। सुनो! जिस राजा का यह सिंहासन है, उसके यहां तुम जैसे तो हजारों नौकर-चाकर थे।"

यह सुनकर राजा आग-बबूला होगया। बोला, "मैं अभी इस सिंहासन को तोड़कर मिट्टी में मिला दूंगा।"

पुतली ने शांति से कहा, "महाराज, जिस दिन राजा विक्रमादित्य से हम अलग हुईं, उसी दिन हमारे

भाग्य फूट गये, हमारे लिए सिंहासन धूल में मिल गया।"

राजा का गुस्सा दूर हो गया। उन्होंने कहा, "पुतली-रानी, तुम्हारी बात मेरी समझ में नहीं आई। साफ़-साफ़ कहो।"

पुतली ने कहा, "अच्छा, सुनो।"

: १ :

अंबावती में एक राजा राज करता था। उसका बड़ा रौब-दौब था। वह बड़ा दानी था। उसी राज्य में धर्मसेन नाम का एक और बड़ा राजा हुआ। उसकी चार रानियां थीं। एक थी ब्राह्मण, दूसरी क्षत्रिय, तीसरी वैश्य और चौथी शूद्र। ब्राह्मणी के एक पुत्र हुआ, जिसका नाम ब्राह्मणीत रक्खा। क्षत्राणी के तीन बेटे हुए। एक का नाम शंख, दूसरे का विक्रमादित्य और तीसरे का भर्तृहरि। वैश्य के एक लड़का हुआ, जिसका नाम चंद्र रक्खा गया। शूद्राणी के धन्वन्तरि हुए।

जब वे लड़के बड़े हुए तो ब्राह्मणी का बेटा दीवान बना। बाद में वहां बड़े झगड़े हुए। उनसे तंग आकर वह लड़का घर से निकल पड़ा और धारापुर आया। हे राजन्, वहां का राजा तुम्हारा बाप था। उस लड़के ने किया क्या कि राजा को मार डाला और राज्य अपने हाथ में करके उज्जैन पहुंचा। संयोग की बात कि उज्जैन में आते ही वह मर गया। उसके मरने पर क्षत्राणी का बेटा शंख गद्दी पर बैठा। कुछ समय बाद

विक्रमादित्य ने चालाकी से शंख को मरवा डाला और स्वयं गद्दी पर बैठ गया।

एक दिन राजा विक्रमादित्य शिकार खेलने गया। बियाबान जंगल। रास्ता सूझे नहीं। वह एक पेड़ पर चढ़ गया। ऊपर जाकर चारों ओर निगाह दौड़ाई तो पास ही उसे एक बहुत बड़ा शहर दिखाई दिया। राजा की इच्छा हुई कि उसे जीत ले। उस नगर का दीवान लूतवरण नाम का आदमी था। अगले दिन राजा ने अपने नगर में लौटकर उसे बुलवाया। वह आया। राजा ने आदर से उसे बिठाया और शहर के बारे में पूछा तो उसनें कहा—"वहां बाहुबल नाम का राजा बहुत दिनों से राज करता है। आपके पिता गंधर्वसेन उसके दीवान थे। एक बार राजा को उनपर अविश्वास होगया और उन्हें नौकरी से अलग कर दिया। गंधर्वसेन अंबावती नगरी में आये और वहां के राजा हो गए। हे राजन्, आपको जग जानता है; लेकिन जबतक राजा बाहुबल आपका राजतिलक नहीं करेगा, तबतक आपका राज अचल नहीं होगा। मेरी बात मानकर राजा के पास जाओ और प्यार में भुलाकर उससे तिलक कराओ।"

विक्रमादित्य ने कहा—"अच्छा।" और वह लूतवरण को साथ लेकर वहां गया। बाहुबल ने बड़े आदर से उसका स्वागत किया और बड़े प्यार से उसे रक्खा। पांच दिन बीत गये। लूतवरण ने विक्रमादित्य से कहा

कि जब आप विदा लोगे तो बाहुबल आपसे कुछ मांगने को कहेगा। राजा के घर में एक सिंहासन है, जिसे महादेव ने राजा इन्द्र को दिया था और इन्द्र ने बाहुबल को दिया। उस सिंहासन में यह गुण है कि जो उसपर बैठेगा वह सात द्वीप नवखण्ड पृथ्वी पर राज करेगा। उसमें बहुत-से जवाहरात जड़े हैं और उसमें सांचे में ढालकर बत्तीस पुतलियां लगाई गई हैं। हे राजन्, तुम उसी सिंहासन को मांग लेना।

अगले दिन ऐसा ही हुआ। जब विक्रमादित्य विदा लेने गया तो उसने वही सिंहासन मांग लिया। सिंहासन मिल गया। बाहुबल ने विक्रमादित्य को उसपर बिठाकर उसका तिलक किया और बड़े प्रेम से उसे विदा किया।

इससे विक्रमादित्य का मान बहुत बढ़ गया। जब वह लौटकर घर आया तो दूर-दूर के राजा उससे मिलने आये। विक्रमादित्य चैन से राज करने लगा।

एक दिन राजा ने सभा की और पंडितों को बुलाकर कहा कि मैं एक अनुष्ठान करना चाहता हूं। आप देखकर बतावें कि मैं इसके योग्य हूं या नहीं। पंडितों ने कहा कि आपका प्रताप तीनों लोकों में छाया हुआ है। आपका कोई बैरी नहीं। जो करना हो कीजिए। पंडितों ने यह भी बताया कि अपने कुनबे के सब लोगों को बुलाइए, सवा लाख कन्यादान और सवा लाख गायें

दान कीजिए, ब्राह्मणों को धन दीजिए, जमीदारों का एक साल का लगान माफ़ कर दीजिए।

राजा ने यह सब किया। एक बरस तक वह घर में बैठा पुराण सुनता रहा। उसने अपना अनुष्ठान इस ढंग से पूरा किया कि दुनिया के लोग धन्य-धन्य करते रहे।

इतना कहकर पुतली बोली, "हे राजन्, तुम ऐसे हो तो इस सिंहासन पर बैठो।"

पुतली की बात सुनकर राजा भोज ने अपने दीवान को बुलाकर कहा—आज का दिन तो गया। अब तैयारी करो, कल सिंहासन पर बैठेंगे।

अगले दिन जैसे ही राजा ने सिंहासन पर बैठना चाहा कि दूसरी पुतली, जिसका नाम चित्ररेखा था, बोल उठी, "हे राजन्, इस सिंहासन पर वही बैठ सकता है, जो राजा विक्रमादित्य जैसा गुणी हो।"

राजा ने पूछा, "विक्रमादित्य में क्या गुण थे?"

पुतली ने कहा, "सुनो।"

: २ :

एक बार राजा विक्रमादित्य की इच्छा योग साधने की हुई। अपना राजपाट अपने छोटे भाई भर्तृहरि को सौंप कर वह अंग में भभूत लगाकर जंगल में चले गये। उसी जंगल में एक ब्राह्मण तपस्या कर रहा था। एक दिन देवताओं ने प्रसन्न होकर उस ब्राह्मण को एक फल

दिया और कहा कि जो इसे खा लेगा, वह अमर हो जायगा। ब्राह्मण ने उस फल को अपनी ब्राह्मणी को दिया। उसने कहा कि इसे राजा को दे आओ और बदले में कुछ धन ले आओ। ब्राह्मण ने जाकर वह फल राजा को दिया। राजा अपनी रानी को बहुत प्यार करता था, उसने वह फल अपनी रानी को दे दिया। रानी की दोस्ती शहर के कोतवाल से थी। रानी ने वह फल उसे दे दिया। कोतवाल एक वेश्या के पास जाया करता था। वह फल वेश्या के यहां पहुंचा। वेश्या ने सोचा कि मैं अमर हो जाऊंगी तो बराबर पाप करती रहूंगी। अच्छा होगा कि यह फल राजा को दे दूं। वह जीवेगा तो लाखों का भला करेगा। यह सोचकर उसने उसे दरबार में जाकर राजा को दे दिया। फल को देखकर राजा चकित रह गया। उसे सब भेद मालूम हुआ तो उसे बड़ा दुःख हुआ। उसे दुनिया बेकार लगने लगी। एक दिन वह बिना किसीसे कहे-सुने राजपाट छोड़कर घर से निकल गया। राजा इंद्र को यह मालूम हुआ तो उन्होंने राज्य की रखवाली के लिए एक देव भेज दिया।

उधर जब राजा विक्रमादित्य का योग पूरा हुआ तो वह लौटे। देव ने उन्हें रोका। विक्रमादित्य ने उससे पूछा तो उसने सब हाल बता दिया। विक्रमादित्य ने अपना नाम बताया, फिर भी देव ने उन्हें न जाने

दिया। बोला, "तुम विक्रमादित्य हो तो पहले मुझसे लड़ो।"



"तुम विक्रमादित्य हो तो पहले मुझसे लड़ो।"

दोनों में लड़ाई हुई। विक्रमादित्य ने उसे पछाड़ दिया। देव बोला, "तुम मुझे छोड़ दो। मैं तुम्हारी जान बचाताहूं।"

राजा ने पूछा, "कैसे ?"

देव बोला, "इस नगर में एक तेली और एक कुम्हार तुम्हें मारने की फिराक में हैं। तेली पाताल में राज करता है और कुम्हार योगी बना जंगल में तपस्या करता है। दोनों चाहते हैं कि एक-दूसरे को और तुमको मार-

कर तीनों लोकों का राज करें। योगी ने चालाकी से तेली को अपने वश में कर लिया है और वह अब सिरस के पेड़ पर रहता है। एक दिन योगी तुम्हें बुलायगा और छल करके ले जायगा। जब वह देवी को दंडवत करने को कहे तो तुम कह देना कि मैं तो राजा हूं, दण्डवत करना नहीं जानता। तुम बताओ कि कैसे करूं। योगी जैसे ही सिर झुकावे, तुम खांडे से उसका सिर काट देना। फिर उसे और तेली को सिरस के पेड़ से उतारकर देवी के आगे खौलते तेल के कड़ाह में डाल देना।

राजा ने ऐसा ही किया। इससे देवी बहुत प्रसन्न हुई और उसने दो वीर उनके साथ भेज दिये। राजा अपने घर आयें और राज करने लगे। दोनों वीर राजा के बस में रहे और उनकी मदद से राजा ने आगे बड़े-बड़े काम किये।

इतना कहकर पुतली बोली, "हे राजन्, तुममें इतनी योग्यता है ? तुम-जैसे करोड़ों राजा इस भूमि पर होगये हैं।"

दूसरा दिन भी इस तरह निकल गया। तीसरे दिन जब वह सिंहासन पर बैठने को हुआ तो रविवामा नाम की तीसरी पुतली ने उसे रोककर कहा, "हे राजन्, यह क्या करते हो ? पहले विक्रमादित्य जैसे काम करो, तब सिंहासन पर बैठना !"

राजा ने पूछा, "विक्रमादित्य ने कैसे काम किये थे ?"

पुतली बोली, "लो, सुनो ।"

: ३ :

एक दिन राजा विक्रमादित्य नदी के किनारे अपने महल में बैठे गाना सुन रहे थे। उनका मन संगीत के रस में डूबा हुआ था। इतने में एक आदमी गुस्सा होकर अपनी स्त्री और बच्चे के साथ घर से निकला और वे सब-के-सब नदी में कूद पड़े। जब वे डूबने लगे तो उन्होंने पुकारा कि है कोई धर्मात्मा, जो हमें निकाले ! आदमी बहुत 'हाय-हाय' कर रहा था और अपनी करनी पर पछता रहा था। तभी राजा के आदमियों ने राजा को खबर दी। वे दौड़े हुए आये। आदमी हैरान होकर कह रहा था कि है कोई ईश्वर का बंदा, जो हमें पार लगावे ! राजा वहां आया और उन लोगों को डूबते देख स्वयं नदी में कूद पड़ा। पानी में आगे बढ़कर उसने स्त्री और बच्चे का हाथ पकड़ लिया। तभी वह आदमी भी राजा से लिपट गया। राजा घबराया। उनके साथ वह भी डूबने लगा। उसी समय उसे अपने दोनों वीरों की याद आई। याद आते ही वे दोनों वहां आगये और चारों को बाहर निकाल लाये। वह आदमी राजा के पैरों पर गिर पड़ा और बोला कि महाराज, आपने हमारी जान बचाई है, आप

हमारे भगवान हो। राजा ने कहा कि बचानेवाला तो ईश्वर है, और एक लाख रुपया देकर उन्हें विदा किया।

पुतली बोली, "हे राजन्, इतने हिम्मतवाले हो तो सिंहासन पर बैठो।"

मुहूर्त्त टल गया। अगले दिन राजा सिंहासन पर बैठने के लिए आया तो चंद्रवली नाम की चौथी पुतली ने उसे रोका और कहा कि पहले मेरी बात सुन लो।

: ४ :

राजा विक्रमादित्य ने एक बार बड़ा ही आलीशान महल बनवाया। उसमें कहीं जवाहरात जड़े थे तो कहीं सोने और चांदी का काम हो रहा था। उसके द्वार पर नीलम के दो बड़े-बड़े नगीने लगे थे, जिससे किसी की नजर न लगे। उसमें सात खण्ड थे। उसके तैयार होने में बरसों लगे। जब वह तैयार होगया तो दीवान ने जाकर राजा को खबर दी। एक ब्राह्मण को साथ लेकर राजा उसे देखने गया। महल को देखकर ब्राह्मण ने कहा, "महाराज, इसे तो मुझे दान में दे दो।" ब्राह्मण का इतना कहना था कि राजा ने उस महल को तुरंत उसे दान कर दिया। ब्राह्मण बहुत प्रसन्न हुआ और अपने कुनबे के साथ उसमें रहने लगा।

एक दिन रात को लक्ष्मी आई और बोली, "मैं कहां गिरूं?" ब्राह्मण समझा कि कोई भूत है।

वह डर के मारे वहां से भागा और राजा को सब हाल कह सुनाया। राजा ने दीवान को बुलवाकर कहा कि महल का जितना मूल्य है, वह ब्राह्मण को दे दो।

इसके बाद राजा स्वयं जाकर महल में रहने लगा। रात को लक्ष्मी आई और उसने वही सवाल किया। राजा ने तत्काल उत्तर दिया कि मेरे पलंग को छोड़कर जहां चाहो, गिर पड़ो। राजा के इतना कहते ही सारे नगर पर सोना बरसा। सवेरे दीवान ने राजा को खबर दी तो राजा ने ढिंढोरा पिटवा दिया कि जिसकी हद में जितना सोना हो, वह ले ले।

इतना कहकर पुतली बोली, "महाराज, इतना था विक्रमादित्य प्रजा का हितकारी। तुम किस तरह उसके सिंहासन पर बैठने की हिम्मत करते हो!"

वह साइत भी निकल गई। अगले दिन फिर राजा सिंहासन पर बैठने को उसकी ओर बढ़ा कि पांचवीं पुतली लीलावती बोली, "राजन्, ठहरो। पहले मुझसे विक्रमादित्य के गुण सुन लो।"

: ५ :

एक बार दो आदमी आपस में झगड़ रहे थे। एक कहता था कि तकदीर बड़ी है, दूसरा कहता था कि पुरुषार्थ बड़ा है। जब किसी तरह मामला न निबटा तो वे इंद्र के पास गये। इंद्र ने उन्हें विक्रमादित्य के पास भेज दिया। राजा ने उनकी बात सुनी और कहा

कि छः महीने बाद आना। इसके बाद राजा ने किया क्या कि भेस बदलकर स्वयं यह देखने निकल पड़ा कि तकदीर और पुरुषार्थ में कौन बड़ा है। घूमते-घूमते उसे एक नगर मिला। विक्रमादित्य उसके राजा के पास पहुंचा और एक लाख रुपये रोज पर उसके यहां नौकर हो गया। उसने वचन दिया कि जो काम और कोई नहीं कर सकेगा, उसे वह करेगा। एक बार की बात कि उस नगर का राजा बहुत-सा सामान जहाज पर लादकर किसी देश को गया। विक्रमादित्य साथ में था। अचानक बड़े जोर का तूफान आया। राजा ने लंगर डलवाकर जहाज खड़ा कर दिया। जब तूफान थम गया तो राजा ने लंगर उठाने को कहा, लेकिन लंगर उठा ही नहीं। इसपर राजा ने विक्रमादित्य से कहा कि अब तुम्हारी बारी है। विक्रमादित्य नीचे उतरकर गया और भाग्य की बात कि उसके हाथ लगते ही लंगर उठ गया; लेकिन उसके चढ़ने से पहले ही जहाज पानी और हवा की तेजी से चल पड़ा।

विक्रमादित्य बहते-बहते किनारे लगा। उसे एक नगर दिखाई दिया। ज्योंही वह नगर में घुसा, देखता क्या है, चौखट पर लिखा हुआ है कि यहां की राजकुमारी सिंहवती का विवाह विक्रमादित्य के साथ होगा। राजा को बड़ा अचरज हुआ। वह महल में गया। अंदर सिंहवती पलंग पर सो रही थी। विक्रमादित्य वहीं बैठ

गया। उसने उसे जगाया। वह उठ बैठी और विक्रमादित्य का हाथ पकड़कर दोनों सिंहासन पर जा बैठे। उनका विवाह होगया।

वहाँ रहते-रहते काफ़ी दिन बीत गये। एक दिन विक्रमादित्य को अपने नगर लौटने का विचार आया और अस्तबल में से एक तेज़ घोड़ी लेकर रवाना होगया। अवन्ती नगर पहुंचा। वहां नदी के किनारे एक साधु बैठा था। उसने राजा को फूलों की एक माला दी और कहा कि इसे पहनकर तुम जहां जाओगे, तुम्हें फतह मिलेगी। दूसरे, इसे पहनकर तुम सबको देख सकोगे, तुम्हें कोई भी नहीं देख सकेगा। उसने एक छड़ी भी दी। उसमें यह गुण था कि रात को सोने से पहले जो भी जड़ाऊ गहना उससे मांगा जाता, वही मिल जाता।

दोनों चीजों को लेकर राजा उज्जैन के पास पहुंचा। वहां उसे एक ब्राह्मण और एक भाट मिले। उन्होंने राजा से कहा––"हे राजन्, हम इतने दिनों से तुम्हारे द्वार पर सेवा कर रहे हैं, फिर भी हमें कुछ नहीं मिला।" यह सुनकर राजा ने ब्राह्मण को छड़ी देदी और भाट को माला। उनके गुण भी उन्हें बता दिये। इसके बाद राजा अपने महल में चला गया।

छः महीने बीत चुके थे। सो वही दोनों आदमी आये, जिनमें पुरुषार्थ और भाग्य को लेकर झगड़ा हो रहा था। राजा ने उनकी बात का जवाब देते हुए कहा––

सुनो भाई, दुनिया में पुरुषार्थ के बिना कुछ नहीं हो सकता। लेकिन भाग्य भी बड़ा बली है। दोनों की बात रह गई। वे खुशी-खुशी अपने-अपने घर चले गये।

इतना कहकर पुतली बोली, "हे राजन्, तुम विक्रमादित्य जैसे हो तो सिंहासन पर बैठो।"

उस दिन का मुहूर्त्त भी निकल गया। अगले दिन राजा सिंहासन की ओर बढ़ा तो कामकंदला नाम की छठी पुतली ने उसे रोक दिया। बोली, "पहले मेरी बात सुन लो।"

: ६ :

एक दिन राजा विक्रमादित्य अपनी सभा में बैठा हुआ था कि एक ब्राह्मण आया। उसने बताया कि उत्तर में एक जंगल है। उसमें एक पहाड़ है। उसके आगे एक तालाब है, जिसमें स्फटिक का एक खंभा है। जब सूरज निकलता है तब वह खंभा भी पानी के ऊपर उभर आता है। जैसे-जैसे सूरज चढ़ता जाता है, खंभा भी बढ़ता जाता है। दोपहर को वह खंभा सूरज के रथ के बराबर पहुंच जाता है। दोपहर बाद जब सूरज घटता है तब खंभा भी नीचा होता जाता है और शाम को सूरज के छिपने के साथ वह भी पानी में लोप हो जाता है।

यह सुनकर राजा को बड़ा अचंभा हुआ। ब्राह्मण

के चले जाने पर उसने दोनों वीरों को बुलाया और ब्राह्मण की बताई सब बात सुनाकर कहा कि मुझे उस तालाब पर ले चलो।

वीरों ने बात-की-बात में उसे वहां पहुंचा दिया। राजा देखता क्या है कि तालाब का चारों ओर से पक्का घाट बना है और उसके पानी में हंस, मुर्गाबियां, चकोर, पनडुब्बी किलोल कर रही हैं। कमल पर भौंरे गूंज रहे हैं। मोर बोल रहे हैं, कोयल कूक रही हैं। राजा बहुत खुश हुआ। इतने में सूरज निकला। खंभा दिखाई देने लगा। राजा ने वीरों से कहा कि मुझे खंभे पर



राजा खंभे पर बैठ गया।

बिठा दो। उन्होंने बिठा दिया। अब खंभा ऊँचा होने

लगा। ज्यों-ज्यों वह सूरज के पास पहुंचने लगा, राजा को गर्मी लगने लगी। जब वह सूरज के रथ के बराबर पहुंचा, राजा जलकर अंगारा होगया। सूरज के रथवान ने यह देखा तो रथ को रोक लिया। सूरज ने झांका तो उसे जला हुआ आदमी दिखाई दिया। उसने सोचा कि जबतक मरा हुआ आदमी पड़ा है तबतक मैं भोजन कैसे करूं। उसने अमृत लेकर राजा पर छिड़का। राजा जी उठा। उसने सूरज को प्रणाम किया। सूरज ने पूछा तो उसने बता दिया कि मेरा नाम विक्रमादित्य है। सूरज ने अपना कुण्डल उतारकर राजा को दिया और उसे विदा किया।

राजा अपने नगर में लौटा। रास्ते में उसे एक गुसाईं मिला। उसने कहा, "हे राजा, यह कुण्डल मुझे दे दो।" राजा ने हँसकर वह कुण्डल उसे दे दिया और अपने घर चला आया।

इतना कहकर कामकुंदला बोली, "तुम ऐसे हो तो सिंहासन पर बैठो।"

राजा बड़ा गुस्सा हुआ। उसने मन-ही-मन कहा, "कुछ भी हो, मैं कल सिंहासन पर जरूर बैठूंगा।"

अगले दिन जब वह ऐसा करने लगा तो कमोदी नाम की सातवीं पुतली उसके पैरों में आ गिरी। बोली, "जरा मेरी बात सुनलो, तब सिंहासन पर बैठना।"

: ७ :

एक दिन राजा विक्रमादित्य सो रहा था। आधी रात बीत चुकी थी। अचानक उसे किसीके रोने की आवाज सुनाई दी। राजा ढाल-तलवार लेकर जिधर से आवाज आ रही थी, उधर चल पड़ा। चलते-चलते नदी पर पहुंचा। आवाज उस किनारे से आ रही थी। राजा ने कपड़े उतारे और तैरकर उधर पहुंचा। देखता क्या है कि एक बड़ी सुंदर जवान स्त्री धाड़ मार-मारकर रो रही है। राजा ने पूछा तो उसने कहा कि मेरा आदमी चोरी करता था। एक दिन कोतवाल ने उसे पकड़ लिया और सूली पर लटका दिया। मैं उसे प्यार से खाना खिलाने आई हूँ, पर सूली इतनी ऊंची है कि मेरा हाथ उसके मुंह तक नहीं पहुंच पाता।

राजा ने कहा—"इसमें रोने की क्या बात है? तुम मेरे कंधे पर चढ़कर उसे खिला दो।"

वह स्त्री थी डायन। राजा के कंधे पर सवार होकर उस आदमी को खाने लगी। पेट भरकर वह नीचे उतरी। राजा से बोली—मैं तुमसे बहुत खुश हूं। जो चाहो सो मांगो। राजा ने कहा—अच्छा, तो मुझे अन्नपूर्णा देदो। वह बोली—अन्नपूर्णा तो मेरी छोटी बहन के पास है। तुम मेरे साथ चलो, दे दूंगी।

वे दोनों नदी के किनारे एक मकान पर पहुंचे। वहां उस स्त्री ने ताली बजाई। बहन आई। स्त्री ने

उसे सब बात बताई और कहा कि इसे अन्नपूर्णा देदो। बहन ने हँसकर उसे एक थैली दी और कहा कि जो भी खाने की चीज़ चाहोगे, इसमें से मिल जायगी। राजा ने खुश होकर उसे ले लिया और वहां से चल दिया। नदी पर जाकर उसने स्नान-ध्यान, पूजा-पाठ किया। इतने में एक ब्राह्मण वहां आया। उसने कहा--भूख लगी है। राजा ने पूछा--क्या खाओगे? उसने जो बताया, वही राजा ने थैली में हाथ डालकर निकाल-कर दे दिया। ब्राह्मण ने पेट भरकर खाया, फिर बोला--कुछ दक्षिणा भी तो दो। राजा ने कहा--जो मांगोगे, दूंगा। ब्राह्मण ने वही थैली मांगली। राजा ने खुशी-खुशी देदी और अपने घर चला आया।

पुतली बोली--हे राजन्, विक्रमादित्य को देखो, इतनी मेहनत से पाई थैली ब्राह्मण को देते देर न लगी। तुम ऐसे दानी हो तो सिंहासन पर बैठो, नहीं तो पाप लगेगा।

राजा भोज सिंहासन पर बैठने को उतावला हो रहा था। अगले दिन जब वह सिंहासन पर बैठने को आगे बढ़ा कि पुष्पावती नाम की आठवीं पुतली ने उसे रोक दिया। बोली--इस पर बैठने की आशा छोड़ दो।

राजा ने पूछा--क्यों?

उसने कहा--लो, सुनो।

: ८ :

एक दिन राजा विक्रमादित्य के दरबार में एक बढ़ई आया। उसने राजा को काठ का एक घोड़ा दिखाया और कहा कि यह न कुछ खाता है, न पीता है और जहां चाहो, वहां ले जाता है। राजा ने उसी समय दीवान को बुलाकर एक लाख रुपया उसे देने को कहा। दीवान ने कहा कि यह तो काठ का है और इतने दाम का नहीं है। राजा ने चिढ़कर कहा––दो लाख रुपये दो। दीवान चुप रह गया। रुपये दे दिये। रुपये लेकर बढ़ई चलता बना, पर चलते-चलते कह गया कि इस घोड़े में ऐड़ लगाना, कोड़ा मत मारना।

एक दिन राजा ने उसपर सवारी की। पर वह बढ़ई की बात भूल गया और उसने घोड़े में कोड़ा जमा दिया। कोड़ा लगना था कि घोड़ा हवा से बातें करने लगा और समुद्र पार लेजाकर उसे जंगल में एक पेड़ पर गिरा दिया। लुढ़कता हुआ राजा नीचे गिरा। मुर्दा-जैसा होगया। संभलने पर उठा और चलते-चलते एक ऐसे बीहड़ बन में पहुँचा कि निकलना मुश्किल होगया। जैसे-तैसे निकला। दस दिन में सात कोस चलकर वह ऐसे घने जंगल में पहुंचा, जहां हाथ तक न सूझता था। चारों तरफ शेर-चीते दहाड़ते थे। राजा घबराया। उसे रास्ता नहीं सूझता था। आखिर पंद्रह दिन भटकने के बाद एक ऐसी जगह

पहुंचा, जहां एक मकान था और उसके बाहर एक ऊंचा पेड़ और दो कुंए थे। पेड़ पर एक बंदरिया थी। वह कभी नीचे आती तो कभी ऊपर चढ़ती।

राजा पेड़ पर चढ़ गया और छिपकर सब हाल देखने लगा। दोपहर होने पर एक यती वहां आया। उसने बांई तरफ के कुएं से एक चुल्लू पानी लिया और उसे बंदरिया पर छिड़क दिया। वह तुरंत एक बड़ी ही सुंदर स्त्री बन गई। योगी पहरभर उसके साथ रहा, फिर दूसरे कुएं से पानी खींचकर उसपर डाला कि वह फिर बंदरिया बन गई। वह पेड़ पर जा चढ़ी और यती गुफा में चला गया।

राजा को यह देखकर बड़ा अचंभा हुआ। यती के जाने पर उसने भी ऐसा ही किया। पानी पड़ते ही बंदरिया सुंदर स्त्री बन गई। राजा ने जब प्रेम से उसकी ओर देखा तो वह बोली--हमारी तरफ ऐसे मत देखो। हम तपस्वी हैं। शाप दे देंगे तो तुम भस्म हो जाओगे।

राजा बोला--मेरा नाम विक्रमादित्य है। मेरा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

राजा का नाम सुनते ही वह उनके चरणों में गिर पड़ी। बोली--हे महाराज, तुम अभी यहाँ से चले जाओ, नहीं तो यती आवेगा और हम दोनों को शाप देकर भस्म कर देगा।

राजा ने पूछा—तुम कौन हो और इस यती के हाथ कैसे पड़ीं ?

वह बोली—मेरा बाप कामदेव और मां पुष्पावती हैं। जब मैं बारह बरस की हुई तो मेरे मां-बाप ने मुझे एक काम करने को कहा। मैंने उसे नहीं किया। इस-पर उन्होंने गुस्सा होकर मुझे इस यती को दे डाला। वह मुझे यहां ले आया और बंदरिया बनाकर रक्खा है। सच है, भाग्य के लिखे को कोई नहीं मेट सकता।

राजा ने कहा—मैं तुम्हें साथ ले चलूंगा। इतना कहकर उसने दूसरे कुंए का पानी छिड़ककर उसे फिर बंदरिया बना दिया।

अगले दिन वह यती आया। जब उसने बंदरिया को स्त्री बना लिया तो वह बोली—मुझे कुछ प्रसाद दो।

यती ने एक कमल का फूल दिया और कहा कि यह कभी कुम्हलायगा नहीं और रोज एक लाल देगा। इसे संभालकर रखना।

यती के जाने पर राजा ने बंदरिया को स्त्री बना लिया। फिर अपने वीरों को बुलाया। वे आये और तख्त पर बिठाकर उन दोनों को ले चले। जब वे शहर के पास आये तो देखते क्या हैं कि एक बड़ा सुंदर लड़का खेल रहा है। कमल देखकर वह रोने लगा। राजा ने कमल उसे दे दिया। वह हँसता हुआ अपने घर चला गया। राजा स्त्री को साथ लेकर अपने महल में आगये।

अगले दिन कमल में से एक लाल निकला। इस तरह हर दिन निकलते-निकलते बहुत-से लाल इकट्ठे हो गये। एक दिन लड़के का बाप उन्हें बाजार में बेचने गया तो कोतवाल ने उसे पकड़ लिया। राजा के पास ले गया। लड़के के बाप ने राजा को सब हाल ठीक-ठीक कह सुनाया। सुनकर राजा को कोतवाल पर बड़ा गुस्सा आया और उसने हुक्म दिया कि वह उस बेकसूर आदमी को एक लाख रुपया दे।

इतना कहकर पुतली बोली, "हे राजा, विक्रमादित्य जैसा दानी और न्यायी हो, वही इस सिंहासन पर बैठ सकता है।"

राजा झुंझलाकर चुप रह गया। अगले दिन वह पक्का इरादा करके सिंहासन की तरफ़ बढ़ा कि मधु मालती नामकी नवीं पुतली ने उसका रास्ता रोक लिया। बोली--हे राजन्, पहले मेरी सुनो।

: ९ :

एक बार राजा विक्रमादित्य ने होम किया। ब्राह्मण आये, सेठ-साहूकार आये, देश-देश के राजा आये। यज्ञ होने लगा। तभी एक ब्राह्मण आया। राजा मंत्र पढ़ रहा था, इसलिए मन-ही-मन उसने ब्राह्मण को दण्डवत् की। ब्राह्मण मन की बात जान लेता था। उसने आशीर्वाद दिया कि हे राजन्, तू चिरंजीव हो।

जब मंत्र पूरे हुए तो राजा ने कहा--हे ब्राह्मण,

तुमने बिना दण्डवत् के आशीर्वाद दिया, यह अच्छा नहीं किया--

जब लग पाँव न लागे कोई ।
शाप समान वह आशिष होई ।।

ब्राह्मण ने कहा--राजन्, तुमने मन-ही-मन दण्डवत् की, तब मैंने आशीष दी ।

यह सुनकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ और उसनें एक लाख रुपये ब्राह्मण को दिये । ब्राह्मण बोला--इतना तो दीजिए, जिससे मेरा काम चले ।

इसपर राजा ने पांच लाख दिये । यज्ञ में और जो लोग आये थे, उन्हें भी खुले हाथ दान दिया ।

इतना कहकर पुतली बोली--राजन्, तुम सिंहासन पर बैठने के योग्य नहीं । शेर की बराबरी सियार नहीं कर सकता, हंस के बराबर कौवा नहीं हो सकता, बंदर के गले में मोतियों की माला नहीं सोहती । तुम सिंहासन पर बैठने का विचार छोड़ दो ।

पर राजा भोज नहीं माना। अगले दिन फिर सिंहासन की ओर बढ़ा तो दसवीं पुतली प्रेमवती ने उसके रास्ते में बाधा डाल दी । बोली--पहले मेरी बात सुनो ।

राजा ने बिगड़कर कहा--अच्छा, सुनाओ ।

पुतली बोली--

: १० :

एक दिन विक्रमादित्य अपने बगीचे में बैठा हुआ था। बसंत ऋतु थी। टेसू फूले हुए थे। कोयल कूक रही थी। इतने में एक आदमी राजा के पास आया। उसका शरीर सूखकर कांटा हो रहा था। खाना-पीना उसने सब छोड़ दिया था, आंखों से कम दीखता था। व्याकुल होकर वह बार-बार रोता था। राजा ने उसे धीरज बंधाया और रोने का कारण पूछा। उसने कहा मैं कालिंजर का रहने वाला हूं। एक यती ने बताया कि अमुक जगह एक बड़ी सुंदर स्त्री रहती है। वैसी स्त्री तीनों लोकों में नहीं है। लाखों राजा-महाराजा और दूसरे लोग आते हैं। उसके बाप ने एक कढ़ाव में तेल खौलवा रक्खा है। कहता है कि उस कढ़ावमें स्नान-करके जो जीता निकल आवेगा, उसीके साथ वह अपनी कन्या का विवाह कर देगा। यह सुनकर मैं वहां गया। लाखों आदमी जल चुके हैं। जबसे उस स्त्री को देखा है, तबसे मेरी यह हालत होगई है।

राजा ने कहा—घबराओ मत। कल हम दोनों साथ-साथ वहां चलेंगे।

अगले दिन राजा ने स्नान-पूजा आदि से छुट्टी पाकर दोनों वीरों को बुलाया। राजा के कहने पर वे उन्हें वहीं ले चले, जहां वह सुंदर स्त्री रहती थी। वहां पहुंचकर वे देखते क्या हैं कि बाजे बज रहे हैं और राज-

कन्या माला हाथ में लिये घूम रही है। जो कढ़ाव में कूदता है, वही भुन जाता है।

राजा उस कन्या के रूप को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ और कढ़ाव के पास जाकर झट उसमें कूद पड़ा। कूदते ही भुनकर राख हो गया।

राजा के दोनों वीरों ने यह देखा तो अमृत ले आये और जैसे ही राजा पर छिड़का, वह जी उठा।

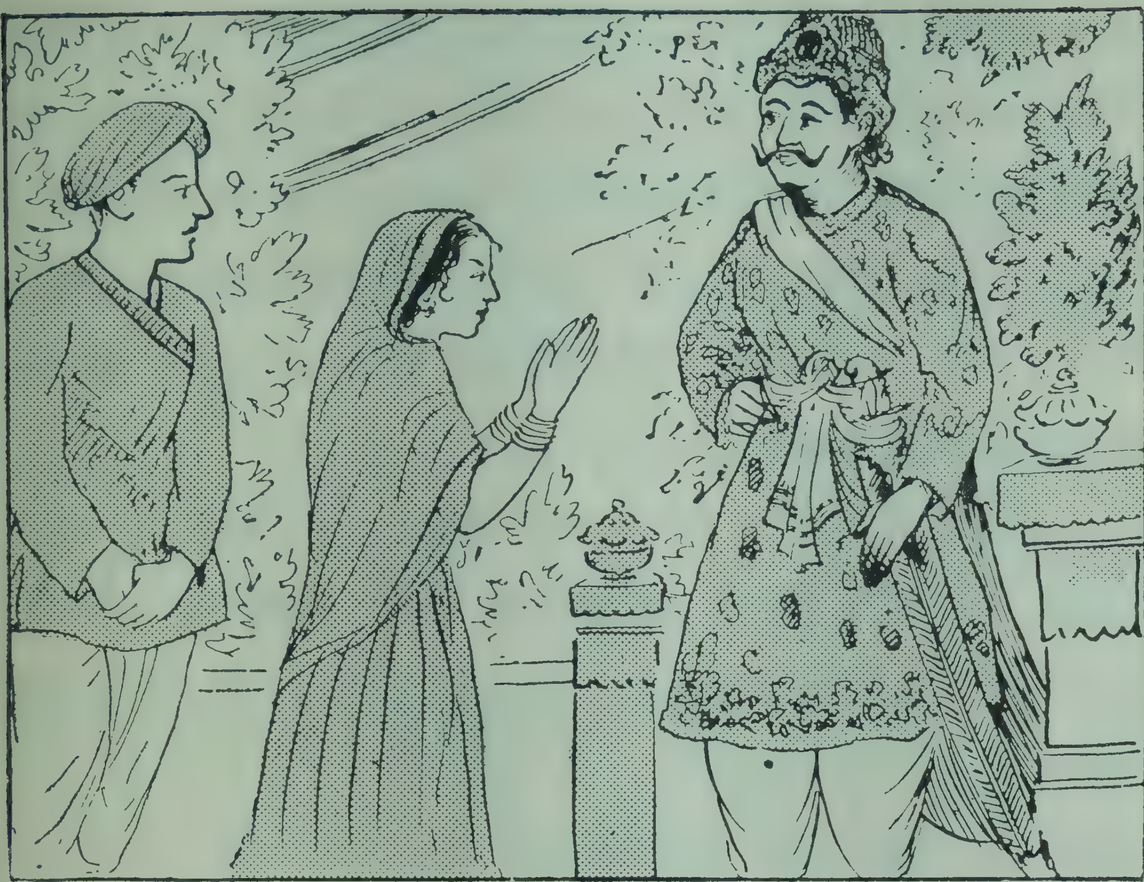
फिर क्या था ! सबको बड़ा आनंद हुआ। राजकन्या का विवाह राजा के साथ होगया। करोड़ों की सम्पत्ति मिली।

राजा के साथ जो आदमी गया था, वह अब भी साथ था। राजा ने उस स्त्री को बहुत-से माल-असबाब-सहित उसे दे दिया।

राजकन्या ने हाथ जोड़कर राजा से कहा---हे राजन्, तुमने मुझे दुख से छुड़ाया। मेरे बाप ने ऐसा पाप किया था कि वह नरक में जाता और मैं उम्र भर क्वारी रहती।

इतना कहकर पुतली बोली---देखा तुमने ! राजा विक्रमादित्य ने कितना पराक्रम करके पाई हुई राजकन्या को दूसरे आदमी को देते तनिक भी हिचक न की। तुम ऐसा कर सकोगे तभी सिंहासन पर बैठने के योग्य होगे।

राजा बड़े असमंजस में पड़ा। सिंहासन पर बैठने



स्त्री ने हाथ जोड़कर कहा, "हे राजन्, तुमने मुझे दुख से छुड़ाया।"

की उसकी इच्छा इतनी बढ़ गई थी कि अगले दिन वह फिर वहां पहुंच गया; लेकिन पैर रखने को जैसे ही बढ़ा कि ग्यारहवीं पुतली परमावती ने उसे रोक दिया। बोली--ठहरो, मेरी बात सुनो।

राजा रुक गया। पुतली ने सुनाया--

: ११ :

एक दिन विक्रमादित्य अपने महलों में सो रहा था। रात का समय था। अचानक उत्तर दिशा से किसीके रोने की आवाज आई। राजा ढाल-तलवार लेकर अंधेरी रात में उसी तरफ बढ़ा। जंगल में आकर देखता क्या है कि एक स्त्री धाड़ मार-मारकर रो रही

है। एक देव उसे हैरान कर रहा था। राजा को क्रोध आगया। दोनों में लड़ाई ठन गई। राजा ने ऐसे जोर से तलवार मारी कि देव का सिर धड़ से अलग होगया। देव के सिर और धड़ से दो वीर निकले। वे राजा से लिपट गये। उनमें से एक को तो राजा ने मार डाला, दूसरा बचकर भाग गया।

राजा ने उस स्त्री से साथ चलने को कहा। स्त्री बोली, "हे भूपाल, मैं कहीं भी जाऊं, उस राक्षस से बच नहीं पाऊँगी। उसके पास एक मोहनी है, जो उसके पेट में रहती है। उसमें ऐसी ताकत है कि एक देव के मरने पर चार देव बना सकती है।"

यह सुनकर राजा वहीं छिप गया और देखने लगा कि आगे क्या होता है। शाम होते ही वह देव फिर आया और उस स्त्री को हैरान करने लगा। राजा से यह न देखा गया। वह निकलकर आया और देव से लड़ने लगा। लड़ते-लड़ते उसने ऐसा खांडा मारा कि देव का सिर कट गया। धड़ से मोहनी निकली और अमृत लेने चली। राजा ने उसी समय अपने वीरों को बुलाया। उनसे कहा कि देखो, यह स्त्री जाने न पावे। वीर उसे पकड़कर ले आये। राजा ने पूछा--तुम कौन हो? हँसती हो तो फूल झड़ते हैं। देव के पेट में क्यों रहती हो?

वह बोली--मैं पहले शिव की एक गण थी।

एक बार शिव की आज्ञा को मानने से चूक गई तो शाप देकर उन्होंने मुझे मोहनी बना दिया और इस देव को दे दिया। तबसे यह मुझे अपने पेट में डाले रहता है। हे राजन्, अब मैं तुम्हारे बस में हूं। तुम्हारे पास रहूंगी, जैसे महादेव के पास पार्वती रहती थीं।



राजा और देव लड़ने लगे।

राजा मोहनी और उस दूसरी स्त्री को लेकर अपने महल में आया। उसने मोहनी से विवाह कर लिया। दूसरी स्त्री से यह पूछने पर कि वह कौन है, उसने बताया कि मैं सिंहलद्वीप के एक ब्राह्मण की कन्या हूं। एक दिन अपनी सखियों के साथ तालाब पर नहाने गई। नहा-धोकर, पूजा-पाठ करके लौटने

लगी तो यह राक्षस मेरे सामने आगया। इसने मुझे बहुत सताया। हे राजन्, तुमने जो मेरा उपकार किया उसे मैं कभी नहीं भूलूंगी। तुम हजार बरस तक जीओगे और नाम कमाओगे।

इसके बाद राजा ने अपने राज्य में से एक योग्य ब्राह्मण ढुंढ़वाकर उसके साथ उस स्त्री का विवाह करा दिया और स्वयं उसका कन्यादान किया। लाखों रुपये उन्हें दान में दिये।

कहानी सुनाकर पुतली बोली--हे राजा भोज, तुम ऐसे हो तो सिंहासन पर बैठो।

राजा जी मसोसकर रह गया। उसने तय किया कि अब वह किसीकी नहीं सुनेगा। लेकिन अगले दिन फिर वही हुआ। राजा के सिंहासन की ओर पैर बढ़ाते ही बारहवीं पुतली कीर्तिमती ने उसे रोककर सुनाया--

: १२ :

एक दिन विक्रमादित्य अपने दरबार में बैठा हुआ था। उसने कहा--कलियुग में और कोई दाता है? एक ब्राह्मण ने बताया कि समुद्र के किनारे एक राजा रहता है, वह बड़ा दान करता है। सबेरे स्नान करके एक लाख रुपये देता है, तब जल पीता है। ऐसा धर्मात्मा राजा दूसरा हमने नहीं देखा।

ब्राह्मण की बात सुनकर राजा की इच्छा हुई कि उसे देखे। अगले दिन अपने वीरों की मदद से वहां पहुँच

गया। वहां के राजा ने उसकी बड़ी आवभगत की। वह उसके यहां चार हजार रुपये पर काम करने लगा। तय हुआ कि जो काम कोई भी नहीं कर सकेगा, उसे वह करेगा।

वहां रहते-रहते नौ-दस दिन बीत गये। राजा विक्रमादित्य सोचने लगा कि दान में यह जो एक लाख रुपये देता है, वे कहां से आते हैं? पता लगाना चाहिए। एक दिन दो पहर रात गये विक्रमादित्य ने देखा कि राजा जंगल की ओर अकेला जा रहा है। वह पीछे-पीछे हो लिया। जंगल में जाकर राजा देवी के मन्दिर के आगे रुका। वहां एक कढ़ाव में तेल खौल रहा था। राजा ने तालाब में स्नान किया, देवी के दर्शन किये और फिर कढ़ाव में कूद पड़ा। कूदते ही भुन गया। तब चौंसठ जोगिनियां आईं और उन्होंने राजा के बदन को नोंच-नोंचकर खा डाला। इतने में देवी आई और उसने उसके हाड़-पिंजर पर अमृत छिड़क दिया। राजा उठ खड़ा हुआ। देवी ने मंदिर में से एक लाख रुपये लाकर दिये। राजा रुपये लेकर चला आया।

अगले दिन विक्रमादित्य ने भी ऐसा ही किया। उसे भी लाख रुपये मिल गये। इस प्रकार सात बार उसने ऐसा किया। आठवीं बार जब वह कढ़ाव में कूदने को हुआ तो देवी ने उसे रोक दिया। कहा कि जो मांगो

सो पाओ। विक्रमादित्य ने उससे वह थैली मांग ली, जिसमें से वह देवी रुपये दिया करती थी। देवी ने दे दी।

दूसरे दिन हुआ क्या कि जब वह राजा रोज के हिसाब से वहां पहुंचा तो देखता क्या है कि न वहां मंदिर है, न कढ़ाव। वह दुखी होकर घर लौट आया। उसके पास दान करने को रुपये न थे तो वह जल कैसे पीता? कई दिन बीत गये। राजा की देह सूख गई। एक दिन विक्रमादित्य ने उससे पूछा कि आपके दुख का क्या कारण है? राजा ने बता दिया। यह सुनते ही विक्रम ने थैली निकालकर उसे दे दी और कहा—महाराज, अब स्नान-ध्यान करके नित्य कर्म कीजिये। इस थैली से जितने रुपये चाहोगे, मिल जायंगे।

थैली मिल जाने पर राजा का सब काम अच्छी तरह से चलने लगा। विक्रमादित्य अपने नगर को लौट आया।

पुतली बोली, "राजन्, देखा ऐसी थैली देने में विक्रमादित्य न हिचका, न पछताया। ऐसा जो राजा हो वही सिंहासन पर बैठे।"

राजा भोज बड़ी द्विविधा में पड़ा। क्या करे? सिंहासन पर बैठने की उसकी इच्छा इतनी बलवती थी कि अगले दिन वह फिर उधर गया, पर हुआ वही, जो पिछले दिनों में हुआ था। तेरहवीं पुतली सुलोचनी आगे आई और उसने राजा को रोक कर कहा कि पहले मेरी

बात सुनो, तब सिंहासन पर पैर रखना।

: १३ :

एक बार राजा विक्रमादित्य शिकार खेलने जंगल में गया। बहुत से मुसाहिब भी उसके साथ थे। जंगल में जाकर शिकार के लिए तैयारी हुई। जानवर घिर-घिरकर आने लगे। इसी बीच राजा की निगाह एक परिंदे पर पड़ी। उसने बाज छोड़ा और स्वयं घोड़े पर सवार होकर उसे देखता हुआ चला। चलते-चलते कोसों निकल गया। शाम होने को हुई तब उसे पता चला कि उसके साथ कोई नहीं है। चारों ओर घना जंगल था। रात होने पर राजा ने घोड़े को एक पेड़ से बांध दिया और उसकी जीन बिछाकर बैठ गया। तभी उसने देखा कि पास में जो नदी है, वह बढ़ती आ रही है। राजा पीछे हट गया। नदी और बढ़ आई। उसी समय उसने देखा किधार में एक मुर्दा बहा आ रहा है और उस पर एक योगी और एक बैताल खींचातानी कर रहे हैं। बैताल कहता था कि मैं इसे हजार कोस से लाया हूं। सो मैं खाऊँगा। योगी कहता था कि मैं इस पर अपना मंत्र साधूंगा। जब झगड़ा किसी तरह नहीं निबटा तो उनकी निगाह राजा पर पड़ी। वे उसके पास आये और सब हाल सुनाकर कहा कि तुम जो फैसला कर दोगे, उसे हम मान लेंगे। राजा ने कहा कि पहले मुझे तुम दोनों कुछ दो, तब न्याय करूंगा। योगी ने हँसकर

उसे एक बटुआ दिया और उससे कहा कि तुम जो मांगोगे, वही यह देगा। बैताल ने उसे मोहनी तिलक दिया। कहा कि जब तुम घिसकर इसे माथे पर लगा लोगे तो सब तुमसे दबेंगे, कोई सामने नहीं ठहर सकेगा।

राजा ने दोनों चीजें ले लीं। फिर उसने बैताल से कहा कि तुम्हें अपना पेट भरना है न! तो मेरे घोड़े को खालो और इस मुर्दे को योगी को दे दो। इस फैसले से दोनों खुश होगये।

राजा दोनों चीजों को लेकर वहां से चला। अपने नगर के पास पहुंचने पर उसे एक भिखारी मिला। वह बोला--महाराज, कुछ दीजिये।

राजा ने बटुआ उसे दे दिया और उसका भेद बता दिया। उसके बाद राजा घर लौट आया।

पुतली बोली, "राजन्, इतना दिलवाला कोई हो तो सिंहासन पर बैठे।"

दूसरे दिन राजा बड़े तड़के उठा। उसने दीवान को बुलाकर कहा कि आज हम सिंहासन पर जरूर बैठेंगे। सौ गायें दान की गईं। ऐन वक्त पर चौदहवीं पुतली त्रिलोचनी ने रोक दिया। राजा ने उठा पैर पीछे खींच लिया।

समाज विकास - माला की पुस्तकें

१. बदरीनाथ
२. जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४. शिवि और दधीचि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर के बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गंगाजी
९. गौतम बुद्ध
१०. निषाद और शबरी
११. गांव सुखी, हम सुखी
१२. कितनी जमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तंदुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी - मानस - मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा ?
४२. नरसी महेता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५. संत ज्ञानेश्वर
४६. धरती की कहानी
४७. राजा भोज
४८. ईश्वर का मंदिर
४९. गांधीजी का संसार-प्रवेश
५०. ये थे नेताजी
५१. रामेश्वरम्
५२. कब्रों का विलाप
५३. रामकृष्ण परमहंस
५४. समर्थ रामदास
५५. मीरा के पद
५६. मिल-जुलकर काम करो
५७. कालापानी
५८. पावंभर आटा
५९. सवेरे की रोशनी
६०. भगवान के प्यारे
६१. हारूं-अल-रशीद
६२. तीर्थंकर महावीर
६३. हमारे पड़ोसी
६४. आकाश की बातें
६५. सच्चा तीरथ
६६. हाजिर जवाबी
६७. सिंहासन-बत्तीसी भाग १
६८. सिंहासन-बत्तीसी भाग २
६९. नेहरूजी का विद्यार्थी - जीवन
७०. मूरखराज
७१. नाना फड़नवीस
७२. गुरु नानक

मूल्य प्रत्येक का छः आना

छः आना